''स्वच्छता अभियान'' – सांस्कृतिक पुरस्कारों में

डॉ0 विधि नागर
असिस्टेंट प्रोफेसर, नृत्य विभाग
संगीत एवं मंचकला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रशंसा, अनुशंसा, पारितोषिक कलाकार का लक्ष्य, स्वभाव तथा साध्य है। संगीत कलायें प्रारम्भ से ही राजश्रय या धनाढ्य जनाश्रय पर आश्रित है। समय परिवर्तन के साथ–साथ यह स्थान, सरकार तथा सरकारी तंत्र ने ले लिया इस आशा के साथ कि संस्कृति के बिना नयी पीढ़ी आगे नहीं बढ़ सकती। परम्परा के बिना धरोहर नहीं हो सकती। अस्तु, बात सोलह आने सही है। संस्कृति विभाग, संगीत नाटक अकादमी, उत्तर/पश्चिमी/दक्षिणी/पूर्वी सांस्कृतिक केन्द्र इत्यादि वर्तमान में सांस्कृतिक गतिविधियों के तथाकथित सरकारी तंत्राश्रय हैं जो कि सांगीतिक धरोहरों को लुप्तप्राय होने से बचाने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं।

अक्टूबर 2014 में लगभग 11 वर्षों बाद उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी ने ''अकादमी पुरस्कारों'' की घोषणा की। अखबार देखकर ऐसा लगा कि पुरस्कार नहीं रेवड़ियाँ बंट रहीं है। भाई–भतीजावाद भी चला और जातिवाद भी। अब ''वाद'' परम्परा में कुछ तो सही कलाकारों का चुनाव हुआ परन्तु कुछ अपनी पसंद के चलते भी पंक्तिबद्ध हो गये। कुछ ऐसे भी हैं जो आजतक कभी मंच पर अपनी प्रस्तुति भी न दे पाये परन्तु अकादमी पुरस्कार से सुशोभित हो गये।

''सम्मान'' सही मायने में कलाकार का नही होता उस ''कला'' का होता है। पर वाह री राजनीति, कि चयनित सभा में सभी रबर स्टाम्पों को बुलाकर अधिकारी अथवा मंत्री वही करते हैं जो वह चाहते हैं। रबर स्टाम्प भी वही हैं जो अपने समय में बँटी रेवड़ियों का लाभ उठा चुके हैं। आश्चर्यजनक बात यह है कि अकादमी के कार्यकर्ताओं को भी वही सूची के कलाकारों के नाम पता है। जो रोज ढोक देते हैं अथवा अपनी कला की खुशबू बिखेर चुके हैं और उस सुगन्ध को कोई भी रोक नहीं सका। अन्यथा उन अधिकारियों को भी अपनी पंसद ही पंसद है, वह ऐसे कलाकारों को ढूंढना ही नही चाहते जो वास्तव में रत्न सदस्यता लायक हैं। ऐसे तमाम कलाकार उत्तर प्रदेश की गलियों में हैं जिन्होंने अपना घर गिरवी रखकर नाटक खेला, गायन, वादन, नृत्य किया, कला को समर्पित रहे। परन्तु अधिकारी उनकी खोज भला क्यूं करें ? अधिकारियों को खोज कर जो ढोक देते हैं। वह आगे–आगे और आगे बढ़ते जाते हैं। इस बार जो पंक्तिबद्ध होते रह गये वह पक्षपात का आरोप लगाने लगे। आर0 टी0 आई0, कोर्ट तथा शिकायती पत्रों का दौर चला फिर सब धीरे–धीरे ठण्डे बस्ते में चले गये। हास्यास्पद बात यह रही कि 11 नवम्बर 2014 को अकादमी पुरस्कार तथा रत्न सदस्यता बंटवाने के लिये पत्र भी चला गया परन्तु ''राशि'' वह तो संस्कृति विभाग के पास थी ही नही। तब पुनः समारोह की अगली तारीख तय करने का पत्र सभी सम्मानित कलाकारों को मिला। सभी घोषित अकादमी पुरस्कृत पंक्ति आज अगली तारीख की बांट जोह रहे हैं। जो आज तक अघोषित है। वाह रे सरकारी तंत्राश्रय और उसके अधिकारी। काश हमारे सम्मानीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी भी स्वच्छ भारत अभियान में इस ओर भी स्वच्छता पर ध्यान दें। मुझे पूरा विश्वास है कि एक दिन ऐसा होगा वह सुबह कभी तो आयेगी, वह सुबह कभी तो आयेगी.....